eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दल की भूमिका

1राकेश कुमार निषाद
2डॉ. कौशलेंद्र कुमार सिंह

1शोधार्थी, राजनीति विज्ञान डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या उत्तर प्रदेश
2एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, ज0ला0ने0स0पी.जी. कॉलेज, बाराबंकी, उ0प्र0

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों द्वारा राजनीतिक संचालन की प्रक्रिया में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का वर्णन किया गया है। वर्तमान समय में लोकतंत्र का स्वरूप कैसा भी क्यों न हो राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति में लोकतंत्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों का उद्भव स्वाभाविक है और इनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है जिसके बिना अध्ययन अवलोकन के समझना मुश्किल है इसलिए भारतीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों की भूमिका का नए सिरे से विश्लेषण और व्याख्या इस शोध पत्र के माध्यम से प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत हुआ।

भारतीय लोकतंत्र में बहुदलीय व्यवस्था प्रचलित है। विभिन्न राजनीतिक दलों के विभिन्न कार्यक्रम और भूमिकाएं हैं। भारत एक विविधताओं वाला देश है। क्योंकि राजनीतिक दलों की उत्पत्ति और संगठन में इन विविधताओं का बहुत प्रभाव पड़ता है और राजनीतिक दलों से लोगों की अपेक्षाएं भी इस विविधता के अनुसार भिन्न–भिन्न हैं इसलिए सभी दलों का एक जैसा स्वरूप नही है और इनकी भूमिकाओं में अंतर है। इस शोधपत्र में विभिन्न राजनीतिक दलों की उत्पत्ति और गठन के सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक आधार पर इनकी विविध भूमिकाओं के विश्लेषण के साथ ही भारतीय लोकतंत्र में इनकी सामान्य भूमिका का भी वर्णन किया गया है।

इस शोध पत्र में राजनीतिक दलों के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों का उल्लेख है। इसमें राजनीतिक दलों की स्थापना के सैद्धांतिक उद्देश्य सत्ता प्राप्त करने के लिए राजनीतिक अवसरवादिता का उद्देश्य और सत्ता प्राप्त करने के बाद इसे बनाएं रखने के व्यावहारिक उद्देश्य के बीच आपसी संबंधों के साथ समय–समय पर इनकी भूमिका का वर्णन है। संदर्भित साहित्य की

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

समीक्षा के आधार पर इस शोध पत्र को लिखा गया है जिसे संदर्भ ग्रंथ सूची में वर्णित किया गया है। शोध पत्र संबंधित लेखकों और विद्वानों के आलेख और साहित्य से सूचनाओं और तथ्यों को पुष्टिकृत किया गया है। इसमें विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दावली– भारतीय लोकतंत्र, राजनीतिक दल, सैद्धांतिक और व्यावहारिक, बहुदलीय व्यवस्था।

प्रस्तावना

1 – राजनीतिक दलों को आधुनिक राजनीति की जीवन डोर कहा जाता है। राजनीतिक गतिशीलता पैदा करने में राजनीतिक दल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये राजनीति की नाव को निरंतर गतिमान रखते हैं और राजनीतिक गतिविधि का संचालन करते हैं। गैर लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में भी यह गुटों और समूहों के रूप में मौजूद होते हैं जो सत्ता के लिए संघर्ष करते है लेकिन निरंकुश और गैर–लोकतांत्रिक सत्ता के द्वारा इन्हें मान्यता प्राप्त नहीं होती है।१ सत्ता के द्वारा ऐसे गुट अथवा समूह जो मौजूद सत्ता का विकल्प बनने की कोशिश करते हैं उनका दमन कर दिया जाता है। बीसवीं शताब्दी में जर्मनी में हिटलर और इटली में मुसोलिनी के नेतृत्व में क्रमशः नाजी दल और फासी दल की स्थापना का उद्देश्य अपनी नीतियों एवं कार्यक्रमों के प्रचार एवं सामाजिक वैधता के लिए इसका सहारा लेना था। इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि न केवल लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में ही नहीं बल्कि तानाशाही व्यवस्थाओं में भी राजनीतिक दल की भूमिका पाई गई है परन्तु लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक दलों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। राजनीतिक दल राजनीतिक चेतना और गतिविधि के मुख्य केंद्र बिंदु हैं।

16वीं सदी ब्रिटेन और 18वीं सदी अमेरिका में अपने प्रारंभिक दौर में एक से दो राजनीतिक दल थे वहीं आज लोकतांत्रिक व्यवस्था के विस्तार के साथ इनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। प्रो मुनरो ने लिखा है कि "विश्व के इतिहास में कभी भी ऐसी स्वतन्त्र सरकार नही रही है जिसमें राजनीतिक दल का अस्तित्व न हो"२ ह्यूबर के अनुसार "लोकतंत्रात्मक यंत्र के चालक में राजनीतिक दल तेल के सामान हैं"।३ इससे राजनीतिक दल के महत्व और प्रासंगिकता का स्पष्ट पता चलता है।

2 – शोध पत्र की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध यह परिकल्पना करता है कि भारत में विभिन्न राजनीतिक दलों की भूमिका उनके उद्भव) संगठन संरचना और प्रकृति के सामाजिक) राजनीतिक) आर्थिक) सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक आधार पर अलग अलग होती है जिनका भारतीय लोकतंत्र पर प्रभाव पड़ता है।

3 – शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र सामाजिक विज्ञान और मानविकी विषयों से संबंध रखता है। शोध पत्र में अनुभव मूलक विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

4 – शोध का उद्देश्य

भारत में विभिन्न राजनीतिक दलों की भूमिका उनके उद्भव) संगठन संरचना और प्रकृति के सामाजिक) राजनीतिक) आर्थिक) सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक आधार पर अलग अलग होती है जिनका भारतीय लोकतंत्र पर प्रभाव पड़ता है सूक्ष्म विश्लेषण और व्याख्या इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

5 – शोध प्रदत्त का एकत्रीकरण और विश्लेषण

- आंकड़ों का एकत्रीकरण प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से निष्पक्षता और शुद्धता के साथ किया गया है। आंकड़ों का सत्यापन संदर्भित साहित्य अध्ययन के द्वारा पुष्टिकृत किया गया है।
- आंकड़ों का विश्लेषण वस्तुपरक निष्पक्ष) तर्कसंगत) न्यायसंगत और वैज्ञानिक तरीके से किया गया है।

6 – राजनीतिक दल का सामान्य परिचय) अर्थ) परिभाषा और सामान्य विशेषताएं

राजनीतिक दल की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है परन्तु विभिन्न राजनीतिक विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा के आधार पर एक सर्वमान्य परिभाषा देने का प्रयत्न किया गया है।

ब्रिटिश विचारक एडमंड वर्क ने राजनीतिक दल की परिभाषा परंपरागत रूप में देते हुए लिखा है । ″राजनीतिक दल लोगों की ऐसी संस्था है जो किन्हीं विशिष्ट सिद्धांतों पर राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने के लिए इकट्ठा होते हैं″।४ अमेरिकी लेखक स्कैट्टस्कनेइडर ने एडमंड वर्क के विचार को खारिज करते हुए लिखा है – ″राजनीतिक दल सबसे पहले तो सत्ता प्राप्त करने के लिए एक संगठित प्रयास है लेकिन इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि इसे सार्वजनिक लूट की शक्ति द्वारा इकट्ठा रखा जाता है″।५ सिग्मंड न्यूमैन ने लिखा है कि ″हम आम तौर पर राजनीतिक दल की परिभाषा किसी समाज के उन सक्रिय राजनीतिक एजेंटों के मुख्य संगठन के रूप में करते हैं जिनका संबंध सरकारी सत्ता पर नियंत्रण करने से और जो विभिन्न विचार रखने वाले समूहों से

लोगों का समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिता करते हैं। इस नाते यह एक महान मध्यस्थ निकाय है जो सामाजिक व्यक्तियों व विचारधाराओं को अधिकृत सरकारी संस्थाओं से संबंधित करता है और जो व्यापक रूप से राजनीतिक समुदाय के भीतर उन्हें राजनीतिक कार्य से जोड़ता है"।६ इस परिभाषा से उदारवादी उदारवादी प्रतियोगी दल व्यवस्था जहां राजनीतिक दल जनता और सरकार के बीच एक कड़ी के रूप में काम करते हैं) के संकेत मिलते हैं। हैराल्ड लैसवेल ने अपनी पुस्तक दि वर्ल्ड रिवोल्यूशन आवर टाइम में राजनीतिक दल की परिभाषा इस प्रकार दिया है । राजनीतिक दल ऐसे संगठन के रूप में हैं जो चुनाव में उम्मीदवार खड़े करते हैं और अपने नाम से मुद्दों को पेश करते हैं"७ शुमपीटर के अनुसार "न केवल राजनीतिक दल ऐसे लोगों का समूह है जो ऐसे सिद्धांतों के आधार पर सार्वजनिक कल्याण को आगे बढ़ाना चाहते हैं) जिस पर सभी सहमत हों बल्कि राजनीतिक सत्ता के लिए प्रतियोगिता पूर्ण संघर्ष में मिलकर काम करने का प्रस्ताव करते हैं" ।८

ऐल्डर्सवेस्ड ने अपनी पुस्तक पॉलीटिकल पार्टी : ए बिहेवियरल एनालिसिस में व्यवहारवादी अध्ययन के अनुसार अपनी परिभाषा देते हुए लिखा कि "दल एक शासन तंत्र या राजनीति है) यह एक सूक्ष्म राजनीतिक व्यवस्था है। इसकी एक सत्ता संरचना होती है और शक्ति नियंत्रण के विशिष्ठ प्रतिमान होते हैं। इसकी प्रतिनिध्यात्मक प्रक्रिया होती है एक निर्वाचन प्रणाली होती है तथा आंतरिक व्यवस्था संघर्षों का समाधान करने, गंतव्य की व्याख्या करने और नेताओं की भर्ती की एक उप–प्रक्रिया होती है"।६ जोसेफ ला पालंबरा के अनुसार "राजनीतिक दल एक औपचारिक संगठन है जिसका उद्देश्य सार्वजनिक पदों पर पहुंचना और उस पर बने रहना है। अकेले या किसी से मिलकर शासन तंत्र पर नियंत्रण रखना है" ।१०

गिल्क्राइस्ट के शब्दों में "राजनीतिक दल नागरिकों के उत्साह युक्त गठित समुदाय को कहते हैं जिसके सदस्य समान राजनीतिक विचार रखते हैं और जो एक राजनीतिक इकाई के रूप में कार्य करते हुए शासन को अपने हाथ में रखने की चेष्टा करते हैं"।११ मार्क्सवादी राजनीतिक दल को वैचारिक आधार पर संगठित बुर्जुआ वर्ग के विरूद्ध सर्वहारा वर्ग का एक संगठन मानते हैं। 1920 में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में यह स्वीकार किया गया कि "साम्यवादी दल अत्यधिक जागरूक) दूरदर्शी और आत्मबलिदानी कार्यकर्ताओं से युक्त एक राजनैतिक संगठन है जिसकी सहायता से मजदूर वर्ग का अत्यधिक प्रगतिशील भाग सर्वहारा को सही मार्ग दिखता है" ।१२

अतः उपरोक्त राजनीति विद्वानों की परिभाषाओं के अध्ययन के बाद हम कह सकते हैं कि ”राजनीतिक दल एक समान उद्देश्य और विचारधारा वाले व्यक्तियों का ऐसा संगठन है जो देश या समाज के व्यापक हित के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपने सेवर्थियों के हितों को बढ़ावा देने के लिए जनता के हित की बात कर निश्चित सिद्धांत, नीतियां और कार्यक्रम विकसित करता है जिसका उद्देश्य राजनीतिक सत्ता को प्राप्त करना होता है“।

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषा के सामान्य निष्कर्ष के आधार पर राजनीतिक दल की निम्नलिखित विशेषताएं प्रकट होती हैं –

- राजनीतिक दल किसी विशिष्ट सिद्धांतों एवं हितों के आधार पर गठित एक औपचारिक संगठन है।
- इसके सदस्यों के बीच में घनिष्ठ संबंध और विचारधारा की एकता पाई जाती है।
- सिद्धांतों और व्यक्तित्वों के बीच स्पष्ट भेद होता है। नेता के व्यक्तिगत विचार दल के विचार नहीं होते है। दल के अपने अलग सामूहिक विचार होते है।
- ये संगठन अपने निर्णय और प्रभाव क्षेत्र को वैध बनाने की कोशिश करते हैं।
- सत्ता प्राप्त करने का लक्ष्य इनका मूल उद्देश्य होता है और इसके लिए संवैधानिक उपायों को अपनाने के विचार और क्रिया को तर्कसंगत मानते है।
- संगठन की निरंतरता बनी रहती है जिसका संभावित कार्यकाल उसके सदस्यों के कार्यकाल से लंबा होता है।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार निम्नलिखित राजनीतिक दल की निम्नलिखित विशेषताएं प्रकट होती हैं –

- साम्यवादी दल संपूर्ण राजनीतिक प्रणाली का मुख्य केंद्र बिंदु है।
- एक विचार) एक दल) और एक सोपान की मान्यता है।
- साम्यवादी दल लगातार सत्तारूढ़ होता है) इसको हटाने के लिए कोई लोकतांत्रिक प्रक्रिया नहीं है।
- मतदाताओं के पास विकल्प सीमित होते हैं। वह एक ही पार्टी से विभिन्न नेताओ में से किसी एक का चुनाव करते हैं दूसरी पार्टी के चुनाव का विकल्प नहीं होता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

• लेनिन के अनुसार लोकतांत्रिक केंद्रवाद इसके मूल में होता है जिसमें संगठन के शीर्षस्थ से लेकर निम्नतर तक सोपान क्रम में संगठित होते है। आदेश ऊपर से नीचे की ओर प्रवाहित होता है।

7 – भारतीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था में राजनीतिक दल की स्थिति एवं दलीय पद्धति –

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था उदारवादी लोकतंत्र के साथ समाजवादी तत्वों का आधार लिए है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का लोकतंत्रात्मक) पंथनिरपेक्ष) समाजवादी गणराज्य होने का स्पष्ट उल्लेख है।१३ भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19 (क) विचार अभिव्यक्ति) इसे कार्य रूप देने के लिए अनुच्छेद 19 (ख) में शांतिपूर्ण प्रदर्शन और आंदोलन करने एवं अनुच्छेद 19 (ग) में समिति) संगठन) दल) और अन्य ट्रस्ट की स्थापना के लिए स्वतंत्रता और अधिकार दिए गए हैं। संविधान के भाग 15 अनुच्छेद 324 से 329 तक निर्वाचन आयोग और उसके कार्य एवं भूमिकाओं का उल्लेख है। जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950–51 में व्यक्ति और दलों के राजनीतिक अधिकारों का वर्णन करता है।१४ भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता है। इसलिए भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप ही दलीय व्यवस्था की विशेषताएं पाई जाती हैं।

8 निष्कर्ष– वर्तमान समय में राजनीतिक दल सत्ता प्राप्त करने के लिए अपनी विचारधारा का त्याग करने के लिए भी तैयार रहते हैं। विगत वर्षों में उत्तर प्रदेश में भाजपा और बहुजन समाजवाद पार्टी) जम्मू कश्मीर में भाजपा पीडीपी गठबंधन) लोकसभा के लिए आमचुनाव 2014 में उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और कांग्रेस का गठबंधन) 2019 में महाराष्ट्र में सरकार बनाने के लिए कांग्रेस–शिवसेना–एनसीपी के गठबंधन हो चुके हैं। मौजूदा समय में राजनीतिक दल विचारधारा का मुखौटा पहनकर करके जनता का मत प्राप्त करते हैं और चुनाव के बाद विचारधारा का त्याग करके बेमेल गठबंधन कर लेते हैं। कभी–कभी यह भी देखा गया है कि किसी दल को पूर्ण बहुमत मिलता है और वह सरकार बनाने के कुछ समय बाद राजनीतिक अवसरवाद व सौदेबाजी की प्रक्रिया के अन्तर्गत उसके विधायक दूसरी पार्टी में शरण लेने लगते हैं जिससे सरकार पर संकट गहरा जाता है। यह प्रवृति लोकतंत्र के लिए घातक है।

छोटे–छोटे क्षेत्रीय राजनीतिक दल जिन का स्वरूप जातिगत भाषाई अथवा सांप्रदायिक होता है, अपने समुदाय के लोगों को एकजुट करते हैं और एक वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करते हुए किसी राष्ट्रीय पार्टी अथवा राज्य स्तरीय पार्टी से निजी आर्थिक या राजनीतिक लाभ के लिए सौदेबाजी कर लेते हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

"इस प्रकार यहां हम देखते हैं कि प्रत्येक राजनीतिक दल की अपनी विचारधारा और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आधार होता है जहां से इनका उद्भव होता है परंतु राजनीतिक दलों के लिए महत्वपूर्ण होता है सत्ता प्राप्त करने का उद्देश्य) राजनीतिक अवसरवाद) वोटरों को अपने पक्ष में एकजुट करने के तौर तरीके। यहां राजनीतिक दल सैद्धांतिक विचारधारा के बजाय व्यवहारिक तौर तरीकों को ज्यादा इस्तेमाल कर रहे हैं ताकि उनको सत्ता प्राप्त हो सके"।

"राजनीतिक दल राजनीतिक व्यवस्था के जैविक घटक हैं। ये अपनी चेतना से राजनीतिक प्रक्रिया का संचालन करते हैं और इस प्रक्रिया में राजनीतिक दलों की स्थापना के सैद्धांतिक उद्देश्य) राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए अवसरवादिता का उद्देश्य और सत्ता प्राप्त करने के बाद इसे बनाएं रखने के व्यावहारिक उद्देश्य के बीच आपसी संबंधों के साथ समय–समय पर इनकी भूमिका में परिवर्तन होता रहता है"।

09 समाधान– राजनीतिक दल लोकतंत्र की जीवन रेखाएं हैं। इनके बिना लोकतंत्र की कल्पना नहीं की जा सकती इसलिए राजनीतिक दल को चाहिए की वह अपने कार्यों एवं नीतियों के प्रति समाज में लोगों का प्रतिनिधित्व उचित प्रकार से करें जिस आशा के साथ उनके निर्वाचक अथवा मतदाता चुनाव में उनको मतदान करते हैं। राजनीतिक दल अपना अस्तित्व तभी बचा पाएंगे और तभी लोकतंत्र सुरक्षित हो पाएगा जब राजनीतिक दल आदर्श प्रतिनिधित्व की शैली में पूर्ण विश्वास करते हैं, जिसमें राजनीतिक दल एवं उनके द्वारा प्रायोजित राजनीतिक प्रतिनिधि एवं उनसे जुड़ी सरकार अपने कार्यों एवं नीतियों के सबंध में अपने निर्वाचक के प्रति उत्तरदाई होते हैं बजाय किसी धनलोलुपता) सत्तालोलुपता और किसी विशेष व्यक्तिगत हितलाभ के।

राजनीतिक दलों का भविष्य बात पर भी निर्भर करता है कि सत्ता में रहकर उन्होंने क्या भूमिका निभाई और अपने नीति और कार्यक्रमों को लागू करने में कितने सफल और कितने असफल रहे। ला पालंबरा और माइरन वीनर लिखा है कि "राजनीतिक दलों का भविष्य उनके द्वारा राजनीतिक विकास का संकट का मुकाबला करने में उनकी सफलता पर निर्भर है"।

10 संदर्भ ग्रंथ सूची

□(१)१०) सी बी गेना) तुलनात्मक राजनीति एवं राजनीतिक संस्थाएं) यू बी एस पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर प्रा लिम) 2004 पेज नं 822

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

- (२)३)११)१७)१६)२१)२३)२६)२७)२८)२६)३०)३१)३२)३३)३)३५) – बी एल फड़िया) भारतीय शासन एवं राजनीति) साहित्य भवन पब्लिकेटर)2011) पेज नं – 346–396
- (४)५)६)८) – जे सी जौहरी) तुलनात्मक राजनीति) स्टार्लिंग पब्लिशर्स प्रा लि 1986) रीप्रिंट 1998)पेज नं 393 – 398
- (६)१०)१२) – सी बी गेना) तुलनात्मक राजनीति एवं राजनीतिक संस्थाएं) यू बी एस पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर प्रा लिम) 2004) पेज नं 822 – 826
- (१८) – डी डी बसु) इंट्रोडक्शन टू दि इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन) 20 एडिक्शन) चैप्टर 3 पेज नं 21
- (१५)१६) – ऑफिशियल वेबसाइट निर्वाचन आयोग) भारत में मतदान) आमचुनाव 2014) चुनाव आयोग पृ नं 1
- (१४) – एम लक्ष्मीकांत) भारत की राजव्यवस्था) मग्रो हिल एजुकेशन (इंडिया) प्रा लि चेन्नई) पंचम संस्करण 2017) चैप्टर नं 42 निर्वाचन आयोग और चैप्टर नं 7 मूल अधिकार
- (१८) – बीबीसी न्यूज़) 14 मार्च 2021
- (२०) – बीबीसी न्यूज़) 14 मार्च 2021
- (२२) – दैनिक जागरण

©IJARMS JOURNAL, 2021